राम-रहीम और
एक आंखवाला शैतान
सीक्रेट एजेन्ट 00½
रहीम
मनोज
कॉमिक्स

राम-रहीम और एक आंखवाला शैतान

•डबल सीक्रेट एजेंट 00½ राम-रहीम.

लेखक : बिमल चटर्जी. •चित्रांकन : दिलीप कदम, हरिश्चन्द्र चव्हाण. (त्रिशूल कॉमिक्स)

...बल्कि पुलिस की मदद करके अपराध जगत् में हंगामा भी मचा दिया।
खबरदार, कोई भी अपनी जगह से हिलने की कोशिश न करे। तुम चारों तरफ से घेर लिए गये हो।

उसकी सूचना पर न केवल पुलिस ने बहुत से कुख्यात अपराधियों को पकड़ा...

...बल्कि स्वयं ने भी कई भयानक अपराधियों को अपने सुदर्शन चक्र...
आई... ई... ई!

...व तीसरी आंख द्वारा मौत के घाट उतार दिया।
हा-हा-हा!
हाय! मर गया। बचाओऽऽऽ।

प्यारे दोस्तो, यहां तक की कहानी आप मनोज कॉमिक्स के गत अंक "राम-रहीम और फोमांचू दी ग्रेट" व "राम-रहीम और कलियुग का भगवान" में पढ़ चुके हैं। अब आगे पढ़ें।

पते-ठिकाने की तो दूर की बात है, हममें से तो किसी ने उसकी शक्ल तक नहीं देखी। सिर्फ नाम ही सुना है।

तभी-
सेवक खुद सेवा में हाजिर है जोगाम्बो।
हैं!
???

रोमांचू सशरीर प्रकट हुआ-
कौन हो तुम?
कलियुग का भगवान् रोमांचू। जिसे तुम अभी-अभी याद कर रहे थे।

ओह, तुम!
रोमांचू!
कलियुग का भगवान्!

जोगाम्बो ! अपने आदमियों से कहो कि मुझ पर से अपनी बंदूकें हटा लें, क्योंकि मुझे यह गुस्ताखी जरा भी पसंद नहीं। फिर मैं तो तुम्हारी ओर मित्रता का हाथ बढ़ाने आया हूं।
वह सब तो ठीक है, लेकिन पहले तुम यह सिध्द करो कि तुम्हीं कलियुग के भगवान फोमांचू हो।

मेरी बात का यही प्रमाण है कि कलियुग के भगवान् को कोई नहीं मार सकता, जबकि वह सबको मार सकता है...

...यदि विश्वास न हो तो अपने आदमियों को गोली चलाने का आदेश देकर देख लो।
फायर।

हा-हा-हा।
धांय... धांय
???
तड़-तड़-तड़
ट्रा-ट्रा-ट्रा

क्यों जोगाम्बो? अब तो तुम्हें विश्वास आ गया कि मैं वास्तव में कलियुग का भगवान हूं।
???
नहीं, अभी नहीं। हो सकता है, तुमने नीचे बुलेटप्रूफ कपड़े पहन रखे हों और इसीलिए गोलियों का तुम पर कोई प्रभाव न पड़ा हो।
!!!

जैकब, सैन्डो, भीखू! सब टूट पड़ो इस पर। अभी मालूम हो जायेगी इसकी असलियत।

लेकिन अगले पल—
आह।
खटाक
ढिशुम
उफ!

अर्र–ई–ई

हा–हा–हा
हफ्फ–हफ्फ!
अरे उल्लू के पट्ठो, गधे की तरह हांफ क्यों रहे हो? उठकर मुकाबला करो।

बदमाशों ने तुरन्त उठकर फोमांचू पर हमला किया, लेकिन उनका फिर वही हश्र हुआ।
आ–ई–ई–ई
खटाक
हाय!

आ–ई–ई–ई
उफ। मर गया!
हाय मेरी लात!

शीघ्र ही वे सभी बदमाश अपने हाथ-पैर तुड़वाकर जमीन सूंघ रहे थे।
हाय! उफ! आह!
क्यों जोगाम्बो? कोई और प्रमाण चाहिए तुम्हें?
अब तुम यह सिध्द करो कि तुम सर्व शक्तिमान भगवान हो।

फोमांचू ने चक्र वाले दास्ताने में लगे हुए एक
को दबाया। तुरन्त लॉकेट की स्क्रीन प्रज्वलि
और उसमें फर्श पर पड़े बदमाशों के चेहरे दिखाई देने लगे।

और दूसरा बटन दबाते ही—
लो, देखो मेरी शक्ति का छोटा-सा नमूना।
सर्र-र्र-र्र
ओह! नहीं।
???

बॉस, हमें बचाओ।
ठहरो फोमांचू! उन्हें मत मारो। वे मेरे खास आदमी हैं।

तुमने मुझे रोक
में काफी देर कर
दी जोगाम्बो। अब
उनकी मौत अट
है।

और —
आ—ई—ई—ई।
सर्र—र्र—र्र

पलक झपकने के साथ ही सब बदमाशों की गरदनें काटकर चक्र वापस कोमाचू की ओर लौट पड़ा...
सर्र—र्र—र्र।

और चक्र के पुनः उंगली पर स्थिर होते ही लॉकेटनुमा टी. वी. स्क्रीन प्रकाशहीन हो गई।

क्यों जोगाम्बो ? और कुछ प्रमाण चाहिए।
नहीं ! बेशक तुम्हारी वजह से मेरा करोड़ों का नुकसान हुआ। फिर भी मैं तुम्हारी तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं। मिलाओ हाथ।

नहीं, मुझसे दूर ही रहो। यदि तुमने मुझे छूने की कोशिश की तो उछलकर छत से टकरा जाओगे।
ओह!

ठीक है। बताओ तुम यहां क्यों आये और मुझसे क्या चाहते हो?
पहले उन सरकटी लाशों को यहां से हटाओ, फिर बातें होंगी।
मेरे आदमी इन लाशों को हटाते रहेंगे। तुम मेरे साथ चलो। हम दूसरे कमरे में चलकर बातें करेंगे।
ठीक है, चलो।
एक अन्य सजे-सजाए कमरे में पहुंचकर—
हां, अब कहो।
तुम्हें मेरा एक काम करना होगा?
कैसा काम?
इस देश के महान वैज्ञानिक प्रोफेसर भास्कर का अपहरण कर उसे मुझ तक पहुंचाना होगा।
यह तुम क्या कह रहे हो? उनका अपहरण करना तो दूर, उन तक पहुंच पाना ही असंभव है। क्योंकि उनके निवास स्थान के चप्पे-चप्पे पर हर समय सख्त पहरा रहता है।

मैं जानता हूं। फिर भी मुझे विश्वास है कि यह काम दूसरों के लिए मुश्किल हो सकता है, लेकिन तुम्हारे लिए नहीं।
इस विश्वास का धन्यवाद! लेकिन एक बात समझ में नहीं आई कि जब तुम स्वयं इतने सर्व शक्तिमान हो और कलियुग के भगवान् हो...

...और तुम्हें कहीं भी आने-जाने में कोई भी रोक-टोक नहीं, कोई भी किसी प्रकार की हानि तुम्हें नहीं पहुंचा सकता तो फिर यह कार्य तुम स्वयं न करके मुझसे क्यों करवाना चाहते हो?
यह बात मेरे समझने की है, तुम्हारे नहीं। बस, तुम हां या न में जवाब दो।

कुछ सोचने-विचारने के बाद—
लेकिन यह तो एक तरफ की दोस्ती हुई, क्योंकि इस काम में सिर्फ तुम्हें ही फायदा होगा। भला इतना खतरा उठाने के बाद मुझे क्या मिलेगा?
हां, यह की तुमने अक्ल की बात। सुनो, जो करोड़ों रुपये का नुकसान तुम्हें मेरी वजह से हुआ है, उसकी भरपाई मैं करूंगा।

क्या सच?

मेरी बात का विश्वास करो। इधर प्रोफेसर भास्कर को तुमने मुझे दिया, उधर तुम्हें हीरों व सोने के रूप में रुपयों का भुगतान हुआ।
ठीक है। मैं तैयार हूं।

लेकिन यह काम तुम्हें आज ही हर कीमत पर पूरा करना होगा।
चिंता मत करो, हो जायेगा। बस, तुम मेरा हिस्सा तैयार रखना।
वह तुम्हें तैयार मिलेगा। अच्छा, अब मैं चलता हूं।
अरे ठहरो, एक बात तो तुम बताई ही नहीं कि प्रोफेसर भास्कर मुझे कहां पहुंचाना
तुम उसे अपने इसी अड्डे पर ले आना। मैं यहीं तुम्हें भुगतान करके उसे ले जाऊंगा।
गुड। यह ठीक रहेगा।
लेकिन एक बात और, कहीं इस सौदे में कोई चाल या धोखा तो नहीं होगा
हा-हा-हा! यदि मुझे तुम्हें किसी चाल में ही फंसाना होता तो इस समय मेरी जगह यहां पुलिस होती और तुम सब उसकी हिरासत में होते...

ओ.के.। गुडलक।
कम्बख्त। सचमुच ही कलियुग का भगवान प्रतीत होता है।
गले ही पल कोमांचू अदृश्य हो गया।

कोमांचू के अदृश्य होते ही जोगाम्बो मुख्य हॉल की ओर चल पड़ा, जहां उसके साथी मौजूद थे।
यदि यह सौदा सफल हो गया तो कोमांचू की दुश्मनी मुझे कोई महंगी नहीं पड़ेगी।

र उस दिन राम-रहीम सुबह से ही प्रोफेसर भास्कर की कोठी पर थे
र इस समय दोपहर हो चुकी थी।
क्या तुम्हें विश्वास है राम कि कोमांचू मेरा अपहरण करने जरूर आयेगा।
उसके हौसले बहुत बुलंद हैं अंकल...

...जब वह दुबा लेंज देकर ग है तो जरूर आयेगा। अब देखना यह है कि वह आपका अपहरण करने के लिए चाल क्या चलता है...

...और वह भी यह जानते हुए कि यहां आपकी सुरक्षा के लिए चप्पे-चप्पे पर सख्त पहारा है।

इसके अलावा मैंने भी अपनी सुरक्षा के लिए कुछ विशेष प्रबन्ध किये हैं राम बेटे...

...और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यदि एक बार वह यहां आ गया तो शायद ही बचकर निकल सके।
क्या सचमुच ?

हां। आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूं।

प्रोफेसर भास्कर दोनों को एक अन्य कमरे में ले गये।
चलो, उन कुर्सियों पर चलकर बैठें।
आश्चर्य है! केवल इन चार कुर्सियों के अलावा कमरे में और कुछ नहीं है।

बैठो।
लेकिन इस खाली कमरे में आप हमें दिखाने क्या लाये हैं अंकल ?

अभी मालूम हो जायेगा। बैठो तो सही।

राम-रहीम उनके बराबर बिछी कुर्सियों पर बैठ गये। तब प्रोफेसर भास्कर ने अपनी कुर्सी के हत्थे पर लगे बटनों में से एक को दबाया।
खट

राम-रहीम, क्या तुम्हें सामने कुछ दिखाई दे रहा है। यानी कोई तबदीली।
नहीं तो, सबकुछ पहले जैसा ही लग रहा है।

हा-हा-हा। जो तबदीली इस कमरे में हुई है, वह दिखाई देने वाली नहीं है। क्योंकि जो शीशे की दीवार कमरे के बीच हमारे मध्य है, वह पारदर्शी है...

... और वह इतनी अभेद्य है कि उसे कोई नहीं तोड़ सकता। विश्वास न हो तो तुम उस पर गोलियां चलाकर देख सकते हो।
यह बात है तो मैं परीक्षा अवश्य लूंगा।
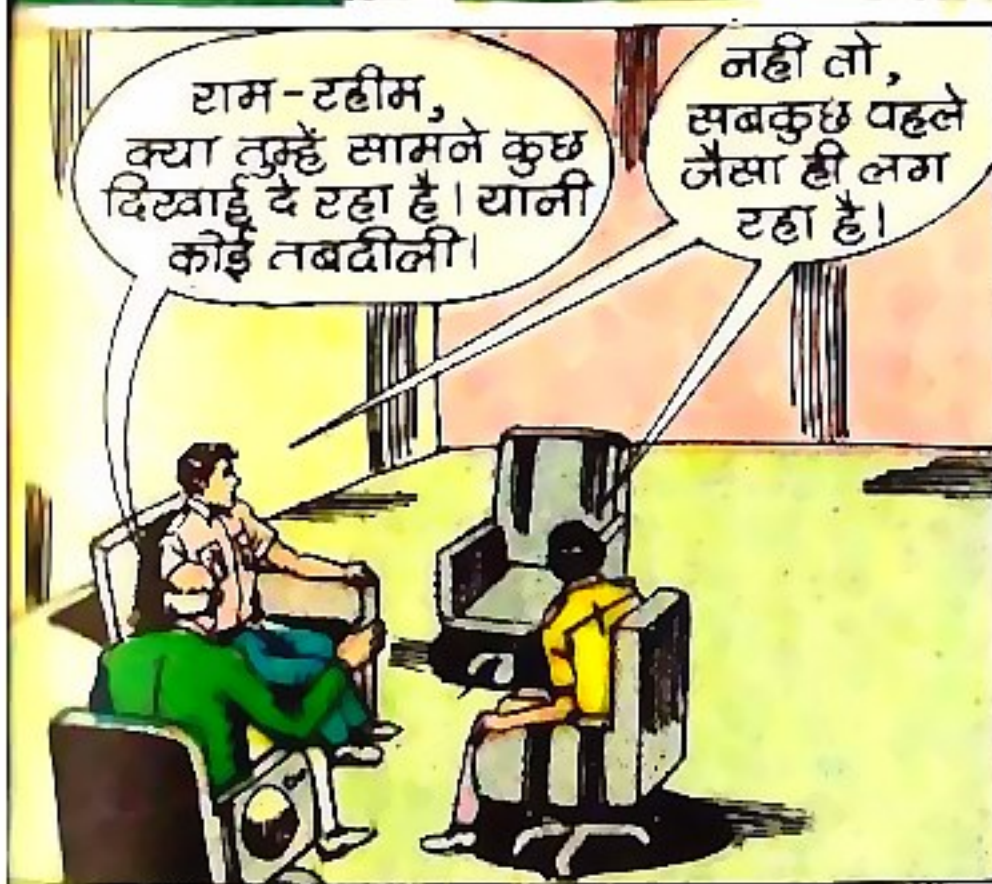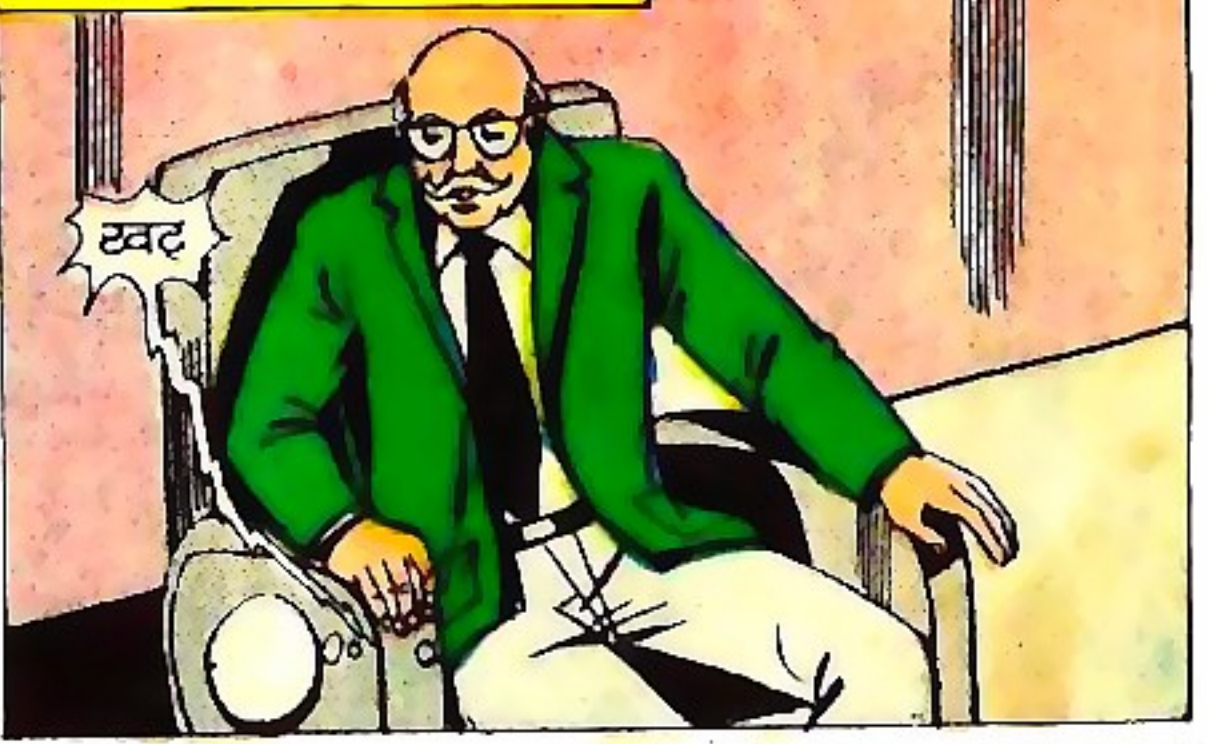
निःसंदेह अंकल! आपका यह आविष्कार महान है। न जाने क्यों अब मुझे कौनांचू की असफलता का विश्वास होने लगा है।

अपनी सुरक्षा का मैंने यही प्रबन्ध नहीं किया है, बल्कि कुछ और भी किया है। और वह चमत्कार भी तुम वक्त आने पर इसी कमरे में देख सकोगे।

...यानी मैं ऐसे लॉकेट की ईजाद कर रहा जिससे निकलने वाली तरंगें सुदर्शन चक्र को गरदन या शरीर के पास नहीं फटकने देंगी और उन तरंगों से टकराकर चक्र वापस लौट जायेगा।
गुड। वह लॉकेट आप कब तक बना लेंगे।
लगभग एक सप्ताह तो लग ही जायेगा।
भोजन के उपरान्त—
बच्चो, अब मैं कुछ देर आराम करना चाहता हूं। यदि चाहो तो तुम दोनों भी आराम कर लो।
ठीक है।
धन्यवाद अंकल। लेकिन हमें आराम की फिलहाल कोई जरूरत नहीं है। आप आराम कीजिए, तब तक हम आपके डुप्लीकेट से मिलकर आते हैं।
उसके बाद प्रोफेसर आराम करने अपने कमरे की ओर चले गये और राम-रहीम एक अन्य कमरे की ओर बढ़ गये।
उसी रात लगभग दस बजे—
राम भइया, मुझे तो रोमांचू की धमकी कोरी बकवास मालूम देती है। अभी तक तो उसकी ओर से कोई कार्यवाही नहीं हुई।
अपराधी प्रकृति के लोग उस समय का इंतजार करते हैं, जब उसका शिकार लापरवाह हो गया हो, यानी रात्रि का समय उनके लिए काफी उपयुक्त रहता है।
यानी तुम्हारे कहने का मतलब है कि वह रात के ही किसी समय में प्रोफेसर अंकल का अपहरण करने की कोशिश करेगा।
हां, यदि वह वास्तव में जांबाज हुआ तो।
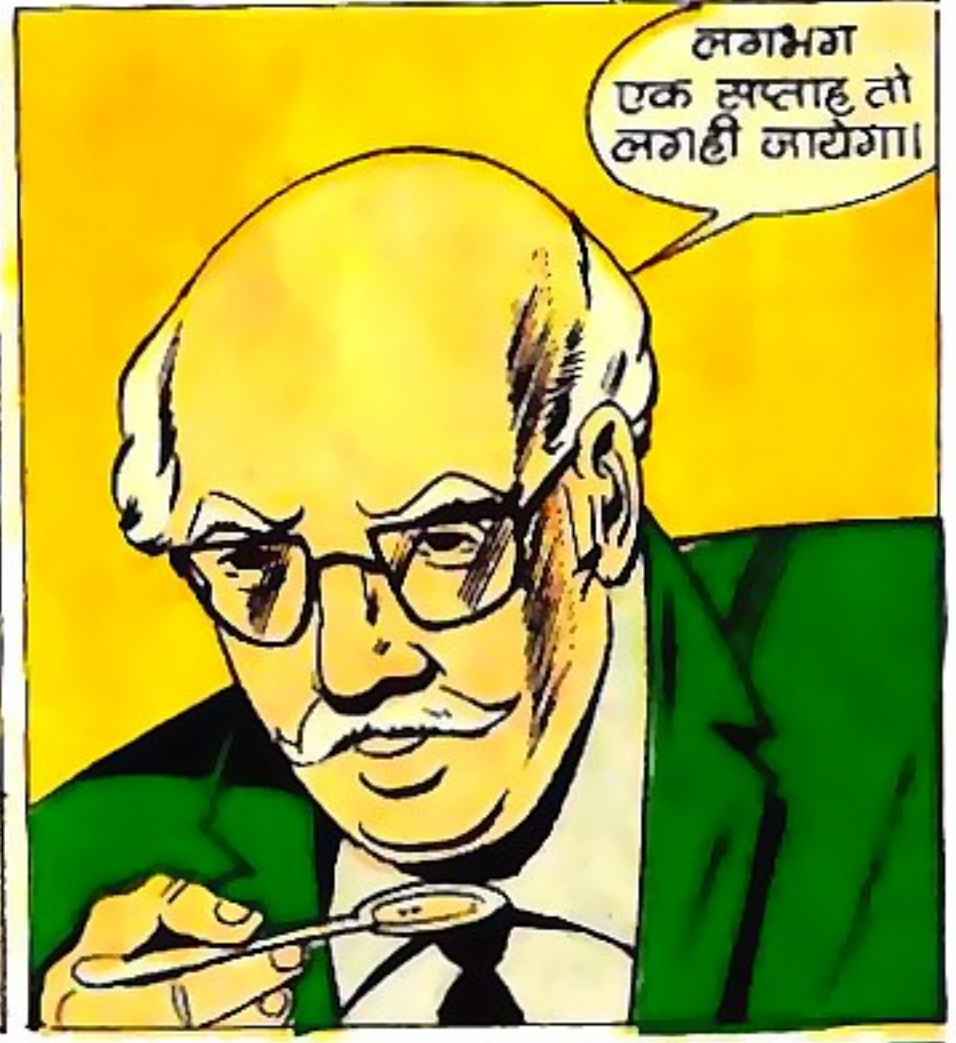
उधर कोठी के बाहर अचानक बहुत से साये उभरे।
कोठी के भीतर सन्नाटा है, जबकि यह दिखावा मात्र है। निश्चित रूप से गुप्त रूप से प्रोफेसर की सुरक्षा का बहुत ही मजबूत प्रबन्ध किया गया होगा।
वे साये जोगाम्बो की कमाण्डो फोर्स के थे।

तभी एक और साया कोठी के पिछवाड़े से निकलकर उनकी ओर बढ़ा।

उस साये के निकट पहुंचने पर—
क्या रहा टाइगर?
बॉस! मैंने तमाम फोन के तार काट दिये हैं। अब उनका बाहर से सम्बन्ध विच्छेद हो चुका है। साथ ही हमारे अन्य साथियों ने पूरी कोठी को चारों तरफ से घेर लिया है और किसी भी मुकाबले के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

गुड। पहले हैण्डग्रेनेड और आग वाले बमों का प्रयोग करो...

...और जब मुकाबले पर सुरक्षाकर्मी आयें तो उन्हें मौत के घाट उतारते हुए भीतर घुसने का प्रयत्न करना है...

...अपने काम में तुम धुएं के बमों का भी प्रयोग कर सकते हो, लेकिन ध्यान रहे, तुम्हें कोठी के भीतर घुसकर दाईं ओर की गैलरी से होते हुए दस नम्बर के कमरे में पहुंचना है, जो कि प्रोफेसर भास्कर का शयनकक्ष है। समझ गये!
यस बॉस।
अगले ही पल-
धड़ाम
धड़ाम
विस्फोटों की आवाज सुनकर कोठी के भीतर-बाहर छुपे हुए सुरक्षाकर्मी जैसे ही अपने स्थान से बाहर निकले-
तड़-तड़-तड़
ट्राट-ट्राट-ट्राट
धांय-धांय
आह!
उफ।
धड़ाम
धड़ाम
जरूर कोमांचू और उसके आदमियों ने कोठी पर हमला किया होगा। आओ राम भइया, उनका मुकाबला करते हैं।
ओह! खतरा आ गया।
मूर्खों की तरह बातें मत करो रहीम। हमें प्रोफेसर अंकल को अकेला छोड़कर कहीं नही जाना है। चाहे बाहर कुछ भी हो रहा हो।

तड़-तड़-तड़
धांय
अंकल, आप तुरन्त उसी कमरे में चलिए, जो आपने अपनी सुरक्षा के लिए तैयार किया है।
ठीक है। चलो।
तीनों तुरन्त उसी कमरे में पहुंच गये और प्रोफेसर ने कुर्सी पर लगे बटन को दबाकर शीशे की अदृश्य पारदर्शी दीवार कमरे के बीचोबीच खड़ी कर दी।
धड़ाम
आह!
उफ!
राम भइया! लगता है, फोमांचू अपनी फौज के साथ यहां आया है।
हां, यही लगता है, लेकिन जल्दबाजी में हम चीफ को फोन करना भूल गये।
तभी-
हा-हा-हा!
अरे, यह कम्बख्त इस गुप्त कमरे में भी पहुंच गया।
अरे! फोमांचू!
फोमांचू!
शीघ्र ही-
आदरणीय काले चचा! तुम यहां तक कैसे पहुंच गये?
ओह!
हा-हा-हा! कलियुग का भगवान कहां नहीं पहुंच सकता भतीजे? अफसोस कि तुमने मुझे मूर्ख बनाने की जो योजना बनाई थी, वह सफल नहीं हो सकी?

लेकिन तुमने तो कहा था कि तुम अकेले आओगे, फिर तुम्हारे साथ यह फौज कैसी ?
वह फौज मेरी नहीं है भतीजे, बल्कि तुम्हारे देश के कुख्यात स्मगलर जोगाम्बो की है, जिसे मैंने सिर्फ चारे के रूप में प्रयोग किया है ?

क्या मतलब ?

तुम्हें तो मैं बता ही चुका हूं कि मुझे देश से गद्दारी करने वालों से बहुत सख्त नफरत है और मैं उन्हें जिन्दा नहीं रहने देता...

...अब समझ लो मैंने स्वयं उसे और उसके साथियों को न मारकर इस तरह मरवाया है, यानी एक तीर से दो शिकार किये हैं। एक तो वे सुरक्षाकर्मियों द्वारा मार दिये जायेंगे। दूसरे उनके कारण सुरक्षाकर्मियों का ध्यान बाहर ही बंटा रहेगा और मैं आराम से प्रोफेसर का अपहरण करके ले जाऊंगा...

...हां, राम की बनाई योजना वैसे अच्छी थी कि यदि मैं यहां पहुंचने में सफल भी हो जाऊं तो डुप्लीकेट प्रोफेसर भास्कर, जो कि कमरा नम्बर दस में प्रोफेसर के शयनकक्ष में सोया हुआ है, उसे ही ले जाऊं और मूर्ख बन जाऊं...

...क्यों भतीजे, यहीथी न तुम्हारी चाल?

हां, लेकिन तुम्हें मेरी योजना का कैसे पता चला?
हा-हा-हा! कहा न कलियुग के भगवान से कुछ नहीं छिपा।

लेकिन प्रोफेसर अंकल का अपहरण कर तुम उन्हें कहा ले जाओगे और उनसे क्या चाहते हो?
अपने देश फिंचलैण्ड ले जाऊंगा, क्योंकि सुदर्शन चक्र और उसकी काट का भेद केवल प्रोफेसर ही जानते हैं।
कहकर...

...रोमांच जैसे ही आगे बढ़ा-
खटाक्
उफ!

हा-हा-हा!

चचा, तुमने कुछ वैज्ञानिक शक्तियां क्या हासिल कर लीं कि अपने-आपको कलियुग का भगवान ही समझ बैठे। अब जरा हम तक पहुंचकर तो दिखाओ।
लगता है, प्रोफेसर ने बीच में कोई अदृश्य दीवार खड़ी कर रखी है...

...लेकिन प्रोफेसर यह भूल गये कि इस सुदर्शन चक्र में क्या शक्ति है...

...लो, तुम लोग भी अपनी आंखों से देख लो भतीजो।

चक्र अदृश्य दीवार से टकराया और-
खर्र-खर्र-खर्र
प्रोफेसर अंकल। आपकी दीवार कट रही है।
देख रहा हूं, लेकिन तुम चिंता न करो।
कहने के साथ ही...

...प्रोफेसर भास्कर ने कुर्सी पर लगा दूसरा बटन दबाया, और कमरे में जैसे बिजली-सी कौंधी-
कड़ाक्
ओह।

अगले ही पल कोमांचू किरणों के जाल में फंस गया।
ओह, नहीं।
क्यों चचा? अब क्या विचार है? क्या अब भी दावे के साथ अंकल का अपहरण करने की क्षमता रखते हो?

तुम दोनों से मैं बाद में निप भतीजो। फिलहाल इन किरणों के जाल आजाद होकर मैं य से जाने में ही अप भलाई समझूंगा

तभी उन किरणों में न जाने कैसी विशेषता आई कि कोमांचू पीड़ा से चीख उठा–
आ–ई–ई–ई।
हा–हा–हा। यह गर्म किरणें है मिस्टर कोमांचू। अब शायद ही तुम इन किरणों से आजाद हो पाओ। यह किरणें चन्द ही सेकिण्डो में तुम्हें जलाकर राख बना देगी।

तभी चक्र पलटकर किरणों को भेदता हुआ...
आह! हफ्फ। हफ्फ!

...कोमांचू के हाथ में आ गया और उसी के साथ कोमांचू रोशनरवाके में बदल गया।
मैं जा रहा हूं, लेकिन याद रखना। मैं जल्दी ही अपने इस अपमान का बदला तुम तीनों से लूंगा।

और जल्दी ही कोमांचू किरणों के जाल
अदृश्य हो गया।
ओह! वह चला गया।
उसके बचने का एकमात्र यही उपाय था।
लेकिन ईश्वर का शुक्र है कि वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया और यही हमारी ओर से उसे सबसे बड़ी शिकस्त है ...

...आइये अंकल, चलकर अब बाहर की सुध लेते हैं।
ठीक है।

प्रोफेसर भास्कर ने बटन दबाकर किरणों का जाल व अदृश्य दीवार हटाई और राम-रहीम के साथ कमरे से बाहर निकल आये।
आश्चर्य है! फायरिंग की कोई आवाज नहीं।
अंकल के शयनकक्ष की ओर चलो! पहले वहीं की खैरियत देखें।

प्रोफेसर के शयनकक्ष मे–
अरे! बिस्तर तो खाली है!
लगता है, जोगाम्बो प्रोफेसर अंकल के डुप्लीकेट का अपहरण कर ले जाने मे सफल हो गया है।'

तभी एक सुरक्षा अधिकारी वहा पहुंचा–
सर, हम अधिकांश आक्रमणकारियों का सफाया करने मे सफल हो गये हैं, लेकिन फिर भी कुछ लोग भाग निकलने मे सफल हो गये हैं।
ओह!

और जब राम ने चीफ मुखर्जी को सारी स्थिति से अवगत कराने के लिए फोन उठाया—
ओह! लाइन तो डैड है। लगता है, जोगाम्बो ने तार काट दिये हैं।

उधर जोगाम्बो के अड्डे पर—
वायदे के मुताबिक मैं हाजिर हूं जोगाम्बो।
वाह! फोमांचू आ गया।

लो फोमांचू, वायदे के मुताबिक प्रोफेसर भास्कर हाजिर है। अब तुम भी अपना वायदा पूरा करो।

हा-हा-हा! तुम मूर्ख हो जोगाम्बो।
क्या मतलब?

मतलब यह कि जिस व्यक्ति को तुम उठाकर लाये हो, वह प्रोफेसर भास्कर नहीं, बल्कि सी.आई.डी. का एक इंस्पेक्टर है।
क्या?

विश्वास न होतो लो, अपनी आंखों से देख लो।
ओह! नहीं!

क्यों, आ गया न विश्वास?
ओफ्फ! एक जासूस को उड़ाने के लिए मेरे पच्चीस आदमियों को अपनी जिन्दगियों से हाथ धोना पड़ा।

हां, और अब तुम लोगों को भी अपनी मूर्खता के कारण अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।
क्या बकवास कर रहे हो?

मुझे न तो बकवास करने की आदत है और न ही सुनने की...

...चलो, अब मरने के लिए तैयार हो जाओ।
कहने के साथ ही...

कोमांचू ने अपनी इकलौती आंख बंद कर ली...

...अगले ही पल माथे पर मौजूद उसकी तीसरी आंख खुली और—
आ—ई—ई—ई!
हाय, मर गया।
बचाओऽऽऽ

शीघ्र ही—
हा—हा—हा। कुछ और शैतानों का अंत हो गया।

अब जरा दोनों भतीजों के साथ-साथ प्रोफेसर भास्कर को भी कुछ सबक सिखाना पड़ेगा।

सुनो मिस्टर जासूस। तुम एक निडर एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हो, इसलिए मैं तुम्हें जिन्दा छोड़े दे रहा हूं...
...लेकिन अपने हुक्मरानों से कह देना कि वह मुझसे उलझने की चेष्टा न करें, वरना घाटे में रहेंगे।

और जासूस को रिहा करने के पश्चात् कोमांचू रोशन खाके में परिवर्तित हो...
...वहां से अदृश्य हो गया।

थोड़ी देरबाद—
जल्दी से अपने ऑफिसर को सारी स्थिति से अवगत कराऊं। कोमांचू इतना चालाक निकलेगा, यह तो मैंने सोचा भी नहीं था।
किर्र....किर्र....किर्र...।

उधर राम-रहीम रात भर प्रोफेसर भास्कर की कोठी में रहे। सुरक्षाकर्मियों व जोगाम्बो के साथियों की लाशों को रातों-रात वहां से हटवा दिया गया था। फिर सुबह नाश्ते की टेबल पर—
प्रोफेसर अंकल! नाश्ता करके हम सीधे घर जायेंगे। आप अपना ध्यान रखियेगा। वैसे मुझे विश्वास है कि कोमांचू अब जल्दी ही आप पर हाथ डालने की कोशिश नहीं करेगा।
हा—हा—हा! यदि करेगा भी तो मुंह की खायेगा...

...तुम निश्चिन्त होकर जाओ। अब मैं कोमांचू से स्वयं निपट लूंगा।
एक बात और अंकल! आप जितनी जल्दी हो सके सुदर्शन चक्र की काट वाला लॉकेट भी तैयार कर लीजिएगा। हमें कभी भी उसकी जरूरत पड़ सकती है।

- क्या पहली बार असफल होने पर कोमांचू ने फिर प्रोफेसर भास्कर का अपहरण करने की कोशिश की?
- राम-रहीम से कोमांचू ने अपने अपमान का किस प्रकार बदला लिया?
- क्या प्रोफेसर भास्कर सुदर्शन चक्र की विरोधी किरणें तैयार करने में सफल हो सके?
- क्या कोमांचू वास्तव में किसी किंगलैण्ड का बादशाह था?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पढ़ें–